दर्पण

दर्पण

सुभद्रा ठाकुर

प्रथम संस्करण

2025

सर्वाधिकार

लेखकाधीन

प्रकाशक

अक्षर-संयोजन

मनोज स्वराज

आवरण

प्रगति गौरव

भव्या भारती

मुद्रक

परसेप्ट प्रिंट्स, पटना

मूल्य

250.00 (दो सौ पच्चास रूपये)

Darpan

by Subhadra Thakur

Rs. **250.00**

समर्पण

पिता जी

स्व. फुलदेव ठाकुर

स्वतंत्रता सेनानी

अनुक्रम

सुभद्रा ठाकुर के सुकोमल मन के भाव
अन्तर्मन की शब्द साधना
अपनी बात

श्रद्धांजलि

1. पिता की याद में - 1
2. माँ - 2

भक्ति गीत

3. पहचानो मुझे - 3
4. मेरे प्रभु - 4
5. भक्ति गीत - 4
6. करूणा कर करूणामयी - 5
7. सुन लो अरज हमारी - 5
8. मैं और मेरा भगवान - 6
9. तेरा दीदार - 6
10. दुनिया की भीड़ - 7
11. नौका फँसी मंझधार - 7
12. मुक्ति में सुख - 8

प्रकृति

13. धरती - 9
14. नदियों का प्रवाह - 10
15. मैं नदी हूं - 11
16. प्रकृति - 12-13
17. सांध्यकालीन -बादल - 14
18. सावन के मतवाले बादल - 15
19. बादल - 15
20. बसन्त - 16
21. सावन - 17
22. बाढ - 18

नव वर्ष एवं पर्व त्योहार

23. रक्षा-बंधन - 19
24. दीपावली की जगमगाहट - 20
25. दीप-जलायें - 20

26. दीपावली - 21
27. शरद-पूर्णिमा - 22
28. विवाह-पंचमी - 22
29. नववर्ष की शुरुआत - 23
30. नववर्ष - 23
31. शीतलहर - 24
32. होली - 25

जिंदगी

33. जिन्दगी-रहमतों की छाँव - 26
34. जिन्दगी के रंग - 26
35. ज़िन्दगी बहुत कुछ सिखाया तुमने - 27
36. जिंदगी एक जंग - 27
37. जिंदगी - 28
38. जीवन - 29
39. जीवन की सांझ - 29
40. जीवन की आपाधापी - 30
41. जीने का सलीका - 31

वक्त

42. वक्त - 32
43. वक्त का पंजा - 32
44. वक्त का खंजर - 33
45. वक्त का बेग - 34
46. वक्त की कटार - 34

प्यार

47. प्यार का एहसास - 35
48. मेरा-प्यार - 36
49. प्यार के मीठे बोल - 36
50. प्रेम पुष्प - 37
51. वैवाहिक-बंधन - 38
52. तेरा मेरा नाता - 39
53. अपनों से दूर - 40

रिश्ते

54. रिश्तो की हकीकत - 41
55. किसपर करूँ यकीन - 41

56. मतलब के रिश्ते - 42
57. टूटते-रिश्ते - 42
58. रिश्ते - 43

देश एवं किसान-मजदूर एवं महात्मा गांधी से संबंधित

59. महात्मा गांधी - 44
60. मजदूर - 45
61. कृषक - 46
62. वतन के रखवाले - 47
63. तिरंगा - 47
64. आजादी - 48
65. मेरा देश - 48

विविध

66. उस - पार - 49
67. खुशी की तलाश - 50
68. शब्द - 50
69. न जाने क्यों - 51
70. चिराग - 52
71. बुलन्द - हौसले - 53
72. अनजाना - भय - 53
73. डर लगता है - 54
74. ठोकर - 54
75. नारी - 55
76. यादें - 56
77. बुढ़ापा - 57
78. झुर्रियां - 58
79. मैं और मेरी चुनौतियाँ - 59
80. फ़र्ज़ - 60
81. धुआँ-धुआँ - 60
82. मन - 61
83. रैन- बसेरा - 62
84. वहम और अहम - 63
85. सब कुछ बदल गया - 63
86. जाग बेटियां जाग - 64
87. अनुभव - 64

88.	इंसानियत मर गयी है	-	65
89.	एहसास	-	66
90.	बदलाव	-	66
91.	नये, बहाने,	-	67
92.	सजा	-	67
93.	मन की पीर	-	68
94.	सीढियाँ	-	68
95.	मौन (चुप्पी)	-	69
96.	घायल मन	-	69
97.	इल्जाम	-	70
98.	अपना पराया	-	70
99.	जख्म	-	71
100.	ख्वाहिशें	-	71
101.	टूटे सपने	-	72
102.	जग की रीति निराली	-	72
103.	धर्म और मजहब	-	73
104.	दुनिया की भीड़	-	73
105.	रमता नहीं मन	-	74
106.	खुशी और गम	-	74
107.	विवशता	-	75
108.	पाना-खोना	-	75
109.	नेक- इरादे	-	76
110.	जंग	-	76
111.	इंसानियत	-	77
112.	उम्मीद की लौ	-	77
113.	कोरोना	-	78
114.	कोरोना के कुप्रभाव	-	78
115.	आपदाओं का बबंडर	-	79
116.	युद्ध की विभीषिका	-	80
117.	कुर्सी पाने की चाहत	-	81
118.	बेखौफ जिन्दगी	-	82
119.	वह बात कहाँ	-	82

मुक्तक

117.	मुक्तक	-	81-90

भूमिका

सुभद्रा ठाकुर के सुकोमल मन के भाव !

- रामबाबू नीरव

सुभद्रा ठाकुर की इस काव्यकृति में संकलित कविताओं पर अपना मंतव्य देने से पूर्व मैं इनकी व्यक्तिगत दैनिक जीवन की कुछ महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं, ताकि इनके व्यक्तित्व के साथ साथ इनकी कृतियों को भी सम्यक रूप से समझा जा सके. मेरी दृष्टि में डा० सुभद्रा ठाकुर एक साथ तीन- तीन उत्तरदायित्वों को निभाने वाली जुझारू महिला हैं. ये एक आदर्श गृहणी, कुशल प्रशासिका के साथ साथ सुकोमल भावों की कवयित्री भी हैं. इन तीन तरहों की जिन्दगी से तारतम्य स्थापित करके काव्य सृजन करने वाली डा० सुभद्रा ठाकुर जी की कविताओं में ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति भाव तो है ही, इसके साथ ही करुणा भी है, ओज भी, सात्विक प्रेम भी है तो प्रकृति के प्रति अनुराग भी और है वर्तमान कश्मकश भरी जिंदगी से मुक्ति की छटपटाहट. एक गृहिणी और शिक्षिका कवयित्री के मन के भावों का काव्य रूप में प्रकटीकरण घर और हृदय के अनुभवों का अनूठा मिश्रण होता है. उनके काव्य में घर की चारदीवारी के भीतर में जीवन,भावनाओं और जिम्मेदारियों की गहरी छाप होती है. जिसे वह अपनी रचनात्मकता और संवेदनशीलता के साथ तालमेल मिलाती हुई सार्वभौमिकता स्थापित करती है. कोई कवयित्री अपनी गृहस्थी के साथ साथ किसी शिक्षण संस्थान (जानकी विद्या निकेतन) के प्राचार्य पद को भी सुशोभित कर रही हो तब ऐसी कवयित्री के लिए घर से लेकर शिक्षण संस्थान का कोना-कोना, हर वस्तु अर्थात कण कण में काव्य ही काव्य दृष्टिगोचर होने लगता है.

सुबह के चाय की चुस्की, खिड़की से आ रही प्रातःकालीन धूप की गर्माहट एवं विद्यालय के बच्चों का शोर के साथ पारिवारिक पृष्ठभूमि उस कवयित्री के लिए उसके काव्य सृजन के विषय बन जाते हैं. परिवार और अपने संस्थान की जिम्मेदारियों के बीच तालमेल

मिलाते हुए साहित्य साधना करना उनके अद्भुत मेधा शक्ति को दर्शाता है. एक तरफ पत्नी और मां की भूमिका है तो दूसरी ओर संस्थान में पढ़ रहे छात्र/छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की परिकल्पना. इन्हीं झंझावातों के बीच जब उनके हृदय की कोमल भावना काव्य के रूप में प्रकट होती है तब उसमें श्रद्धा-भक्ति और करुणा के साथ साथ सौंदर्य का भी दर्शन किया जा सकता है. इसके साथ ही एक यथार्थ और भी है कि जब सुभद्रा जी रात के सन्नाटे में अथवा उषाकाल की शान्ति में काव्य सृजन करती होंगी, तब वे हर तरह की चिंताओं से मुक्त होकर सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई सशक्त कविताओं का सृजन करती होंगी, ऐसा मेरा मानना है.

आईए अब जरा इनकी कविताओं की पंक्तियों का रसास्वादन करें -

सर्वप्रथम मेरी दृष्टि पड़ती है इनकी क्षणिकाओं पर. चार पंक्तियों की अपनी इन कविताओं को इन्होंने क्षणिका का नाम दिया है, जबकि मेरी दृष्टि में इनकी ये चतुष्पदियां मुक्तक की श्रेणी में आती हैं. क्योंकि क्षणिकाएं अतुकांत होती हैं. परंतु मुक्तक तुकांत होती हैं, इनकी प्रस्तुत चतुष्पदियां तुकांत है, इसलिए मैं इन्हें मुक्तक मानता हूं. खैर, क्षणिका कहें अथवा मुक्तक इनके भावों से कुछ कुछ निराशावादिता की झलक मिलती है -

"अब भला क्या गिला और कैसा शिकवा

जिन्दगी है बस चंद लम्हों का मेला

थम जाएगा जिस दिन सांसों का रेला

मिट जाएगा जग से रंजिशों का खेला."

जहां इस मुक्तक में हताशा की झलक है वहीं दूसरे मुक्तक में इन्होंने आशावादी दृष्टिकोण को प्रार्थमिकता दी है. जरा देखिए -

""बीमार हूं पर हताश नहीं हूं "

जीवन से निराश नहीं हूं

तम्मनाओं के कदम अभी थके नहीं हैं

हौसले के चिराग अभी बुझे नहीं हैं."

इस तरह अपने मुक्तकों में कवयित्री आशा और निराशा के बीच एक सुखद तारतम्य स्थापित करती हैं, जो स्तुत्य है. इस संग्रह में संकलित इनकी प्रथम कविता है "पिता के प्रति." इस कविता के द्वारा इन्होंने अपने पूज्य पिता श्रद्धेय फूलदेव ठाकुर, जो कि एक जांबाज स्वतंत्रता सेनानी थे, के पूरे व्यक्तित्व तथा राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा

सन् 1942 के आंदोलन में एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप उनके त्याग और तपस्या को काव्य के रूप में सृजित किया है वह अपने पिता के प्रति इनकी श्रद्धा और अनुराग को दर्शाता है. एक पुत्री का अपने जांबाज स्वतंत्रता सेनानी पिता के प्रति इससे बड़ी श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है.? इस कविता की कुछ पंक्तियां देखें -

"मैं बेटी हूं स्वतंत्रता सेनानी की

देशभक्त, त्यागी, बलिदानी की.

तेजपुंज, सरल स्वाभिमानी की."

इस कविता को ओजपूर्ण कविता की श्रेणी में भी रखा जा सकता है और एक पुत्री की अपने राष्ट्रवादी पिता के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि के रूप में भी देखा जा सकता है.

सुभद्रा जी सिर्फ अपने पिता के प्रति ही समर्पित नहीं हैं, बल्कि अपनी पूज्यणीय माता जी के प्रति भी इनके हृदय में उतनी ही श्रद्धा और भक्ति है, जितनी की अपने पूज्य पिताजी के प्रति -

"मां तुम से ही है मुझ में अनंत उर्जा का संचार

तुम्हारा स्नेहिल स्पर्श करता

मेरे जीवन का विस्तार."

जब कवित्री परमात्मा के प्रति श्रद्धावान होती हैं तब वे परम पिता परमेश्वर का दर्शन किस रुप में करती हैं, जरा अवलोकन करें -

"मैं कौन हूं पहचानो मुझे,

मैं जरा-मरण से सर्वथा मुक्त

मैं अनंत, अखंड अगोचर हूं."

ईश्वर को अगोचर मानने वाली कवयित्री सुभद्रा जी दूसरी ओर साकार रूप में मां जगदम्बे का स्तुतिगान करने से भी परहेज नहीं करती -

"जगदम्बे करुणा कर करुणामयी

जय हे चण्डिके अम्बिके जगदम्बे"

कवयित्री के मन में जहां एक ओर ईश्वर के प्रति अटूट आस्था, निष्ठा और श्रद्धा है, वहीं दिनों-दिन बदरंग होती जा रही इस दुनिया के प्रति परम पिता परमेश्वर से शिकायत भी है. कवयित्री की पैनी दृष्टि से देखें तो ऐसा लगता है जैसे आज की दुनिया भीड़ तंत्र में तब्दील होती जा रही है. मगर इस भीड़भाड़ का हिस्सा होती हुई भी ये स्वयं को बिल्कुल तन्हा

महसूस कर रही हैं -

"दुनिया की भीड़ में कितने हम अकेले हैं,

ऐ मालिक तेरी दुनिया में कितने झमेले हैं."

इस सुन्दर संसार में हर कोई मुक्त रहना चाहता ठीक वैसे ही जैसे प्रकृति का कण-कण मुक्त है. मुक्त यानी स्वतंत्र. देखिए ईश्वर द्वारा प्रदत्त स्वतंत्रता का चित्रण कितने सुकोमल भाव के साथ सुभद्रा जी ने किया है -

"मुक्त गगन, है मुक्त पवन है, मुक्त हैं दिशाएं,

मुक्त रवि का प्रकाश!

मुक्त अर्णव की उत्ताल तरंगें,

मुक्त नदी का प्रवाह,

मुक्त हिमालय का उतुंग शिखर, मुक्त है नक्षत्र निकर."

सुभद्रा ठाकुर की कविताओं में श्रद्धा है, भक्ति है, प्राकृतिक संरचनाओं के प्रति प्रेम है और है भावनाओं का प्रवाह. सुभद्रा जी मात्र कवयित्री नहीं हैं, बल्कि एक सफल वक्ता भी हैं. ये गूढ़ से गूढ़ विषय पर भी अपने ओजस्वी वाणी से सारगर्भित उद्गार प्रकट करके श्रोताओं को मुग्ध कर देती हैं. इनके साथ मंच साझा करने का कई बार मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है और इनके सान्निध्य में मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता रहा हूं.

रामबाबू ' नीरव '

अध्यक्ष, प्रगतिशील लेखक संघ

पुपरी, सीतामढ़ी

9801779842

अन्तर्मन की शब्द साधना

रचनात्मक ऊर्जा से लबरेज श्रीमती सुभद्रा ठाकुर का यह काव्य संकलन "दर्पण" सृजनात्मक बोध का एक बेहतर उदाहरण है। भावनाओं की रसात्मक अभिव्यक्ति कविता का आकार ले लेती है। कविता केवल शब्दों का खेल नहीं, यह संवेदना को संरक्षित करती है, संस्कृति का पोषण करती है, परम्परा को ढोती है और वर्तमान को आत्मसात करती चलती है। इन बातों को प्रस्तुत काव्यसंग्रह में समझी जा सकती है। श्रीमती ठाकुर एक संवेदनशील रचनाकार हैं। ये अपने गार्हस्थ्य जीवन के प्रति संवेदनशील हैं, अपने अध्यव्यवसाय के प्रति सजग हैं, अपनी सृजनशीलता के प्रति भी भरसक ईमानदार हैं। अपने माता-पिता के प्रति स्मरण समर्पण, पारिवारिक रिश्तों, आपसी आहार व्यवहार, पर्व त्योहार, ऋतु परिवर्तन, सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों, मानवीय मूल्यों के क्षरण आदि जीवन से संबंधित तमाम बातों पर गंभीर चिंतन की झलक ' दर्पण ' की कविताओं में परिलक्षित होती है। परिवार, समाज में अपनी दिनचर्या की छोटी-छोटी बातों, घटनाओं में कविता ढूंढ लेना श्रीमती ठाकुर की खास विशेषता है।

पीड़ा या प्रसन्नता की अनुभूति घनीभूत हो कर जब शब्दों में उतरती है तो ऐसी कविता पाठकों को अधिक आकर्षित करती है। श्रीमती सुभद्रा ठाकुर के इस कविता संग्रह में भिन्न भिन्न खंडों में भिन्न भिन्न भावभूमि की कविताएं संकलित है। लगभग सभी मुक्त छंद की कविताएं हैं। कहीं कहीं छंदोबद्ध करने का प्रयास भी हुआ है पर बखूबी हो नहीं पाया है। फिर भी विशेषता यह है कि सारी रचनाओं का भाव पक्ष बहुत उम्दा है। यहां जीवन का यथार्थ भी है और आदर्श भी है। जीवन के विभिन्न आयामों और जटिलताओं से उलझती सुलझती कविता पाठकों पर अमिट छाप छोड़ेगी ऐसा विश्वास है। इस संकलन के अंतिम खंड में कुछ मुक्तक मिजाज की कविताएं हैं जो कोई दो पंक्तियों की, कोई चार पंक्तियों की तो कोई कोई पांच या छः पंक्तियों की कविताएं भी है।इन मुक्तकों में चिंतन के भिन्न भिन्न ठिकाने हैं। जीवन और प्रकृति के वर्णन चित्रन में कवियत्री की विशेष रुचि है जो कविताओं को पढ़ते हुए महसूस होता रहता है। पारिवारिक परिवेश और आपसी रिश्तों पर कई कविताएं हैं जो जो उपयोगी विमर्श की सलाह देती है। मन के तरंगों की भावाभिव्यक्ति में प्यार मुहब्बत का भी भरपूर हस्तक्षेप पढ़ने में दिखता है। मन तो मुखर हुआ पर पूरी शालीनता के साथ।

'दर्पण ' काव्य संग्रह की कुछ कविताओं को बानगी बतौर देखा जा सकता है। जीवन की सच्चाइयों पर कविता बोलती है

"परछाइयों के पीछे भागना ही सदा तुझको भाया।

हकीकत से रूबरू होने का कभी साहस न पाया।।"

इसी तरह एक स्थान पर लिखा है

"किस दोस्त शोहरत पर मूर्ख तू इतराता

सब है आंखों का धोखा, मन को भरमाता "

इस काव्य संग्रह में वर्षा और बादल बढ़िया वर्णन आता है। रचनाकार का अवलोकन इस तरह है।

"झुम झूम मृदु गरज गरज घहराये घंटा घनघोर।

राग अमर अम्बर में भर मचा देता पर में हहरोर।"

मुक्तक भाग में कहीं कहीं शाश्वत सत्य भी सामने आता है

"लाख लगाओ तुम पहरा

होनी का है भारी पलरा "

एक मुक्तक है

" असत्य का बादल है इतना गहरा

सकते में है सत्य मौन कबसे खड़ा "

स्व को बोध कराती कविता भी है -

" मुझे मत घसीटो सवालों के कटघरे में

मैं स्वयं जबाब हूं हर सवाल का"

सार संक्षेप यह है कि 'दर्पण' नामक कविता संग्रह की पुस्तक पठनीय है। इसमें समाज और परिवेश का प्रतिबिम्ब दिखता है। श्रीमती सुभद्रा ठाकुर के व्यक्तित्व का निचोड़ इसमें घुलामिला है।

मैं रचना और रचनाकार के प्रति घनत्वपूर्ण शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं। सब पर ईश्वर की कृपा हो।

विमल कुमार परिमल

अपनी बात

--------++----------

मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं एक स्वतंत्रता सेनानी की बेटी हूं। मैं अपने पिताजी की सादगी, सच्चरित्रता, ईमानदारी एवं उनकी देशभक्ति की भावना से बेहद प्रभावित रहीं हूं। उनके इन सारे गुणों का प्रभाव मेरे मनो मस्तिष्क एवं आचरण पर भी पड़ा। मेरे भ्राता श्री भुवनेश्वर ठाकुर, सेवानिवृत्त प्राध्यापक पटना विश्वविद्यालय, से मेरे पढ़ाई लिखाई में मार्गदर्शन एवं सहयोग मिलता रहा। मेरे दूसरे जेष्ठ भ्राता स्वर्गीय बिंदेश्वर ठाकुर, जो पटना साइंस कॉलेज में कार्यरत थे एवं अन्य जेष्ठ भ्राता श्री अखिलेश्वर ठाकुर, सेवानिवृत्त डीएसपी का भी भरपूर सहयोग मिला। मेरी पढ़ाई लिखाई आद्योपांत पटना में ही हुई। विवाहोपरान्त मैं सीतामढ़ी आ गई। 1982 में सीतामढ़ी स्थित श्री ठाकुर युगल किशोर सिंह महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में मैंने अपने अध्यापन की शुरुआत की। 1983 में मेरी नियुक्ति सरकारी शिक्षक के रूप में माध्यमिक विद्यालय में हुई और तब से अब तक मैं अध्ययन और अध्यापन से जुड़ी रही हूं। इसी अवधि में सीतामढ़ी में सेवा निवृत्ति के बाद रह रहे जेष्ठ भ्राता श्री स्वर्गीय मथुरा ठाकुर जो हिंदी विभाग में प्राध्यापक हुआ करते थे का भी निर्देशन एवं मार्गदर्शन मिलता रहा। मैंने एक प्राध्यापक, शिक्षक के रूप में एवं प्राचार्य के पद पर अलग-अलग स्थान पर पूरी निष्ठा ईमानदारी एवं कर्तव्य परायणता से अपना कार्य संपादित किया। सेवानिवृत्ति के बाद अपने द्वारा स्थापित निजी विद्यालय में भी प्राचार्य के रूप में कार्यरत हूं। बच्चों से मिलने वाला मान- सम्मान ही मेरे जीवन की पूंजी और मेरा आत्म बल है।

एक संवेदनशील व्यक्ति या साहित्यकार अपने इर्द-गिर्द के परिवेश, सामाजिक, प्राकृतिक नैतिक एवं चारित्रिक परिवर्तन, मानवीय मूल्यों का क्षरण होते देखता है, गुनता है, भोगता है, जीता है और अनुभूत करता है। उस हकीकत को कागज के पन्नों पर उकेड़ता है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है, उसे हम नकार नहीं पाते। परंतु कभी-कभी वही निर्मम परिवर्तन मनुष्य को तोड़ता है, झकझोरता है एवं उसके जीवन की दिशा और दशा को भी परिवर्तित कर देता है, एक सीख भी दे जाता है। जीवन जीने की नई कला एवं धैर्य और हौसला आफजाई भी करता है।

मेरी पुस्तक में जो कविताएं संकलित हैं वह मेरी व्यक्तिगत अनुभूति एवं बाह्य परिस्थितियों से उत्पन्न विचारों की अभिव्यक्ति है। कभी अपने बरामदा में बैठकर जब सायंकालीन बादल को देखती हूं तो उसका सौंदर्य प्रभावित किए बिना मुझे नहीं रहता, कभी नदियों का प्रवाह, कभी धरती का धैर्य,उसकी हरीतिमा, तो कभी वसंत का मादक सौंदर्य, तो कभी सावन की रिमझिम फुहार, तो कभी बाढ़ की विभीषिका, तो कभी केदारनाथ का जल प्रलय का रौद्र विनाशकारी लीला, कभी जीवन और वक्त का बदलता

विविध रंग, जीवन की आपाधापी में खोने पाने का निराला खेल खेलता मानव। कभी जीवन आनंद और सुख से परिपूर्ण लगता है, तो कभी अत्यंत जटिल, जटिलताओं से भरे जीवन में रिश्तों की धूप छाया एवं उनकी मिठास, तो कभी कड़वाहट एवं छटपटाहट, कभी वक्त के हाथों बनते, बिगड़ते, बिखरते, टूटते अरमानों के महल, तो कभी संवरते, चमकते आशियाने। कभी पैरों के नीचे से सरकती जमीन। अनुभवों की लंबी दास्तान है यह जिंदगी। जीवन की निस्सारता, अनित्य जग का परिवर्तन देख मन का विचलित होना, मन में वैराग्य का भाव उत्पन्न होना एवं अनश्वर ईश्वर की भक्ति की तरफ उन्मुख होना और वही शांति की तलाश करना।

हमारे देश में विभिन्न प्रकार के पर्व और त्योहार मनाने की सुदीर्घ परंपरा है। यह पर्व त्योहार हमारे जीवन की नीरसता को समाप्त कर उनमें नव स्फूर्ति एवं खुशियां भर देते हैं। यह हमारे सकारात्मक और हमारे सुषुप्त संस्कारों को जागृत करते हैं।

किसान और मजदूर हमारे देश के मेरुदंड हैं। हमारी जान हैं, धरती का श्रृंगार है। उनकी सक्रियता और जागरूकता के प्रमाण है लहलहाते खेत। सुख के तमाम साधनों को जुटाने वाला किसान और मजदूर कितना बेबस और लाचार है।

रिश्तों की इमारत विश्वास और प्रेम की नींव पर ही टीके होते हैं। स्नेह और श्रद्धा के शीतल जल के छिड़काव से ही रिश्तों का पौधा पुष्पित, फलित होगा अन्यथा सूख जाएगा।

हमारे समाज में समय समय पर अनेक अमानवीय, रोंगटे खड़ा करने वाली घटनाएं घटित होती रहती है। दंगे फसाद के रूप में, कभी जातीय, कभी राजनीतिक, कभी धार्मिक असहिष्णुता के कारण, तो कभी बलात्कार के कारण। ऐसी घटनाओं के घटित होने पर हमारा समाज बिखरने लगता है। राष्ट्र की सर्वतोमुखी उन्नति रुक जाती है और पूरे समाज में वैमनस्य, असंतोष, क्रोध, अपमान की अग्नि में जलने लगता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को इस दिशा में आत्म चिंतन और आत्म मंथन करने की आवश्यकता है।

कोरोना नामक महामारी के कारण अस्त-व्यस्त जनजीवन उसके दुष्परिणामों को हम भोग चुके हैं। अतः उससे सीख लेने की आवश्यकता है कि जो शोषक, अत्याचारी और अहंकारी हैं उससे सावधान रहें सन्मार्ग पर चलें।

इस पुस्तक को छपवाने की प्रेरणा मेरे उदारमना, संवेदनशील मेरे पति श्री दिनेश चंद्र द्विवेदी के द्वारा मिली। वे मेरे प्रेरणा के स्रोत हैं, जीवन पथ पर निरंतर अग्रसर कर मेरी प्रतिभा को निखारने वाले, मेरे आत्मबल को ऊंचा कर मुझे गौरवान्वित करने वाले हैं। दूसरा महत्वपूर्ण योगदान मेरे पुत्र प्रगति गौरव का है जिसकी बलवती इच्छा और भरपूर सहयोग का परिणाम यह पुस्तक है।

इनके साथ-साथ बहुत चर्चित कथाकार राजेंद्र सिंहा, सतत जागरूक, ऊर्जावान एवं हर साहित्यिक गोष्ठियों की जान एवं शान विमल कुमार परिमल, उच्च कोटि के उपन्यासकार

रामबाबू नीरव, भावुक संवेदनशील कवि सुरेश वर्मा जैसे उच्च कोटि के विद्वान साहित्यकार मेरे प्रेरणा के स्रोत है। इनके साथ-साथ वरीय पत्रकार रमाशंकर शास्त्री ने समय-समय पर मेरा उत्साह वर्धन किया एवं मुझे सरस्वती कह कर मेरा मान बढ़ाया।

मेरी सेवानिवृत्ति के पश्चात मेरे द्वारा स्थापित विद्यालय, जानकी विद्या निकेतन में समय-समय पर विभिन्न प्रकार की साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इनमें चंदौली कॉलेज के पूर्व प्राचार्य दशरथ प्रजापति सेवानिवृत्त प्राचार्य रेणु ठाकुर, केदार शर्मा, शशि रंजन मुकुल, सेवा निवृत्त वरीय प्रबंधक राम प्रमोद मिश्रा, प्रबंधक राम रंजन त्रिवेदी, ज्ञान भारती के निदेशक श्री रामभद्र, माउंट फोर्ट स्कूल के निदेशक, आनंद कुमार मिश्र सेवा निवृत्त स्टेशन मास्टर बच्चा प्रसाद विह्वल, पूर्व प्राचार्य विद्या दास, डॉक्टर कल्याणी शाही, चंद्रकांति वर्मा, प्राध्यापिका पंकज वार्षणेयी। इन सबों की विद्वाता, सक्रियता एवं साहित्य के प्रति गहरी अभिरुचि, इन सबों की लेखन प्रतिभा, वाचन शैली का प्रभाव मेरे मनो मस्तिष्क पर पड़ा। यह सभी विद्वत जन मेरे प्रेरणा के स्रोत हैं। इन सबों के प्रति मैं तहे दिल से आभार प्रकट करती हूं।

सुभद्रा ठाकुर
सेवा निवृत्त प्राचार्या,
राज्यकीयकृत उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, बलहा मुसहरी
वर्तामान प्राचार्या जानकी विद्या निकेतन
सीतानगर, वार्ड नं. 29, सीतामढ़ी
9430012353